हिन्दी - विभाग डॉ० कविता कु० सिंह
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

स्नातक, खण्ड - 3

विषय - ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ —

(2) लोप — लोप का अर्थ है लुप्त हो जाना। शब्द में जब कोई ध्वनि लुप्त हो जाती है तो इस लोप होने को भाषा-विज्ञान में ध्वनि लोप कहते हैं। लोप मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं — स्वरलोप, व्यंजनलोप, अक्षरलोप। इसके निम्नलिखित भेद हैं — आदि स्वरलोप, मध्य स्वरलोप, अन्त्य स्वरलोप; आदि व्यंजनलोप, मध्य व्यंजनलोप, अन्त्य व्यंजनलोप, आदि अक्षरलोप, मध्यअक्षरलोप, अंतअक्षरलोप, समाक्षर लोप

आदि स्वरलोप — जब किसी शब्द के आर[...] में किसी स्वर का लोप हो जाता है तो उ[...] आदिस्वरलोप कहते हैं। जैसे — अनाज[...] अमीर > मीर आदि।

मध्य स्वरलोप — जब किसी शब्द के मध्य में किसी स्वर का लोप हो जाता है तो उसे मध्य स्वरलोप कहते हैं। जैसे — कृपया > कृपा, गरदन > गर्दन।

अन्त्य स्वर लोप — जब किसी शब्द के अंत में किसी स्वर का लोप हो जाता है तो उसे अन्त्य स्वर लोप कहते हैं। जैसे रात्रि > रात, निद्रा > नींद, परीक्षा > परख आदि।

आदि व्यंजन लोप — जब किसी शब्द के आरम्भ में किसी व्यंजन का लोप हो जाता है तो उसे आदि व्यंजनलोप कहते हैं। जैसे — स्थान > थान, श्मशान > मसान।

मध्य व्यंजन लोप — जब किसी शब्द के मध्य किसी व्यंजन का लोप हो जाता है तो उसे मध्य व्यंजन लोप कहते हैं जैसे — दुग्ध > दूध, कार्तिक > कातिक, स्रोत > सोत

अन्त्य व्यंजनलोप — जब किसी शब्द के

World Tourism Day

I am not a product of my circumstances. I am a product of my decisions. – Stephen Covey

अंत में किसी व्यंजन का लोप हो जाता है, तो उसे अन्त्य-व्यंजन लोप कहते हैं।
जैसे — आम्र > आम, निम्ब > नीम।

आदि अक्षरलोप — जहाँ किसी पूर्व प्रचलित शब्द के आरम्भ में से कालान्तर में कई स्वर और व्यंजन लुप्त हो जायें, वहाँ आदि अक्षरलो[प] होता है। जैसे — त्रिशूल > शूल, शार्दूल > [illegible]

मध्यअक्षर लोप — जब किसी प्रचलित शब्द [के] मध्य में कई स्वर और व्यंजन लुप्त हो जा[ते] हैं वहाँ मध्य अक्षर लोप होता है जैसे — फलाहार > फलार, भांडागार > भंडार।

अंत अक्षरलोप — जब किसी शब्द के अंत [में] कई स्वर और व्यंजन लुप्त हो जाते हैं, व[हाँ] अंत अक्षर लोप होता है। जैसे मर्कटिका > मकड़ी, व्यंग्य > व्यंग आदि।

3) विपर्यय — जब किसी शब्द के स्वर, [व्यंजन] या अक्षर एक स्थान से दूसरे स्थान

Appointments

चले जाते हैं और दूसरे स्थान के पहले स्थान पर चले जाते हैं। जैसे —
अमरूद > अरमूद, मतलब > मतबल, वाराणसी > बनारस।

(4) अल्पप्राणीकरण — कभी-कभी महाप्राण ध्वनियाँ अल्पप्राण हो जाती हैं। जैसे — सिन्धु > हिन्दू, श्रेष्ठ > श्रेष्ट, भीरव > भीड़ आदि।